

DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST
TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR
PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-6,
NEO-FREUDIANS:CONTRIBUTION OF KEREN
HORNEY
LECTURE-59

कैरेन हार्नी का योगदान (karen horney,1885-1952)

कैरेन हार्नी का जन्म हैमवर्ग,जर्मनी में हुआ था | 12 साल की उम्र में उन्होंने चिकित्सा शास्त्र पढ़ने का निर्णय किया है |बर्लिन विश्वविद्यालय से उन्होंने एम०डी० की उपाधि प्राप्त की |1913 तक उन्होंने अपना मेडिकल प्रशिक्षण पूरा कर लिया | इन्होंने अपने जीवन-वृत्ति (career) का शुभआरम्भ एक परम्परानिष्ठ फ्रायडियन के रूप में किया तथा कार्ल एब्राहम द्वारा उन्हें मनोविश्लेषित भी किया गया |कई सालो तक बर्लिन साइकोएनालिटिक इंस्टीच्यूट में फ्रायड के सिधांतो पर वे कार्य करती रही |1923 में पहली बार उन्होंने एक शोध पत्र के माध्यम से फ्रायड के सम्प्रत्ययो को चुनौती दिया | उन्होंने फ्रायड के शिश्न ईर्ष्या (penis envy) के सम्प्रत्यय पर कड़ा प्रहार किया

| 1932 में वे फ्रेज इलेक्जेंडर के बुलावा पर अमेरिका गयी जहाँ उन्होंने 'शिकागो साइकोएनालिटिक इंस्टीच्यूट'में एक नया पद मिला | वे उस समय तक मनोविज्ञानियो,मानवशास्त्रियों तथा समाजशास्त्रियों के समूह का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी थी | उनके समूह में सुलीभान , मार्गेट मीड, जॉन डोलाई ,एब्राहम मैसलो,रुथ बेनेडिक्ट आदि थे | इनकी चारो किताबे काफी मशहूर हुई- दी न्यूरोटिक परसोनालिटी ऑफ़ आवर टाइम (THE NEUROTIC PERSONALITY OF OUR TIME 1937) आवर इन्नर कनफ्लिक्ट (OUR INNER CONFLICT 1945),सेल्फ एनालिसिस (SELF ANALYSIS 1942) तथा न्युरोसिस एंड ह्युमन ग्रोथ (NEUROSIS AND HUMAN GROWTH 1950) | उनकी मृत्यु कैंसर से 1952 में हो गयी |

हार्नी एक महिला मनोवैज्ञानिक है जिनका दृष्टिकोण मनोविज्ञान के प्रति नया था |फिर भी उनके विचारों में एक परम्परागत मनोविश्लेषणात्मक चिन्तन की स्पष्ट झलक मिलती है |मनोविश्लेषण के मूलतत्वों को वे सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों पर बल डालते हुए व्याख्या करने की कोशिश की है | वे शिशन ईर्ष्या के संप्रत्यय को सबसे पहले बार 1923 में चुनौती दी | फिर वे फ्रायड के योगदानों को पुर्णतः अस्वीकृत नहीं की और उनकी मान्यता प्रदत्त करते हुए वे अपने विचारों को निम्नांकित शीर्षकों के तहत उपस्थित किये -

1.मूल दुश्चिंता (BASIC ANXIETY)

2.स्नायुविकृत आवश्यकता तथा स्नायुविकृत प्रवृत्तियाँ (NEUROTIC NEEDS AND NEURATIC TRENDS)

3.चिंता को कम करने के उपाय (ATTEMPTS AT COPING ANXIETY)

इन सब का वर्णन निम्नांकित है -

1.मूल दुश्चिंता - हार्नी के मनोविज्ञान में मूल दुश्चिंता का संप्रत्यय का काफी महत्व है | इनका मत था की प्रत्येक सामान्य एवं स्वस्थ व्यक्ति में कुछ सर्जनात्मक (CREATIVE) एवं घनात्मक अन्तः शक्ति होती है |जब उसे स्नेह एवं प्यार मिलता है ,तो वह उन अन्तः शक्तियों को दिखाता है और इससे उसमे आत्म-विश्वास विकसित होता है |दुसरे तरफ यदि उसके मौलिक अन्तःशक्ति की अभिव्यक्ति नहीं होती है या उसकी पूर्ति नहीं होती है ,तो उसमे दुश्चिंता की उत्पत्ति होती है | हार्नी का मत है की मूल दुश्चिंता व्यक्ति में बाल्यावस्था में उस समय विकसित होता है जब बच्चा अपने को असमर्थ एवं निःसहाय महसूस करता है तथा अलग-बगल के वातावरण को धमकीपूर्ण मानता है |हार्नी के अनुसार मूल दुश्चिंता के तीन तत्व होते है -असमर्थता का भाव (feeling at helplessness),विद्वेष (hostility) तथा अलगाव (isolation)

2.स्नायुविकृत आवश्यकताएँ तथा स्नायुविकृत प्रवृत्तियाँ-जब व्यक्ति अपनी जिंदगी की बहुत सारी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाता है जिसके कारण उसे बार बार असफलता हाथ लगती है तो उसमे कुछ विशेष आवश्यकताएँ उत्पन्न हो जाती है |इन आवश्यकताओं को हार्नी ने स्नायुविकृत आवश्यकता कहा है क्योकि इन से कोई संगत समाधान नहीं होता है |ऐसी आवश्यकताएँ सामान्य एवं मनःस्नायुविकृत दोनों ही तरह के लोगो में उत्पन्न होता है |

To be continued.